PHOG

Important Multipurpose Shrub of Thar Desert

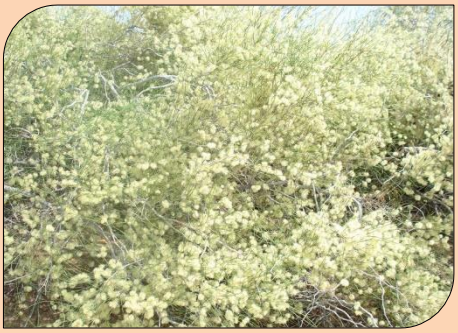

Phog (*Calligonum polygonoides*) is one of the important shrubs of sandy areas in western Rajasthan. A local proverb pervalent in Marwar region indicates it's importance :

"Aak ra jhopara, Phog ri bad, bajre ri roti,
moth ri dal, dekho re raja tharo Marwar"

The proverb literally means that in the Marwar region, Aak (*Calotropis procera*) is used for making huts, Phog for hedge, bajra (pearl millet) for making bread and the moth bean is used as pulse.

Economic Importance

The flower buds, locally called '*Fogla*' are being used by inhabitants in preparing traditional dish called *Rayta* by mixing with curd. They are also light boiled or fried in ghee and mixed in curd or with Chaach (buttermilk).

The young green and fleshy branches are browsed preferably by camel and also by sheep, goat and cattle. Fodder from Phog is called '*Lasu*' and supposed to be a nutritious feed for camels. Regarding the importance of Phog in relation to milk production in goat there is a local saying:

"Phog phota minman biyahi, bhensri ghirani chach lewan aayi"

This local proverb means that when Phog comes in flowering, milk quantity in goat increases and at that time even buffalo owner comes to take butter milk from goat owners.

Its branch or roots decoction is used as a remedy for sore gums. Juice of branches also used as antidote when the milky juice of Aak *(Calotropis procera)* enters into eyes.

Phog has been the chief source of domestic fuel wood in western Rajasthan and still considered as the best fuel wood. Its charcoal is used by goldsmiths and ironsmiths.

Conservation

Phog is being a key species of natural vegetation cover of sand dunes in Thar Desert and play an important ecological and socio economic role in the life of Desert inhabitants. Keeping in view the multiple utility of Phog it is vital to identify its natural distribution areas for its *in situ* conservation. Simultaneously there is need for its integration in different alternate land use systems.

ENVIS Centre on Combating Desertification
ICAR-Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur - 342003

फोग

थार मरूस्थल की महत्वपूर्ण बहुद्देषीय झाड़ी

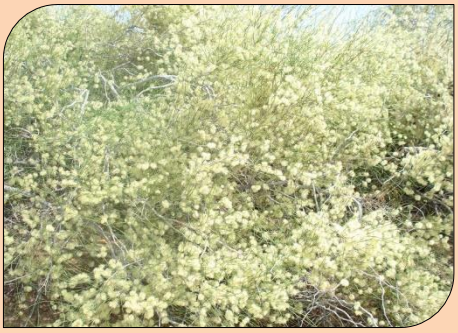

फोग जिसका वानस्पतिक नाम 'कैलिगोनम पोलीगोनोइड्स' है, पश्चिमी राजस्थान के रेतीले टीबों की एक प्रमुख झाड़ी है। मारवाड़ क्षेत्र के लिए इसकी उपयोगिता निम्न लोकोक्ति से चरितार्थ होती है:

'आक रा झोप रा, फोग री बाड, बाजरे री रोटी
मोठ री दाळ, देखो रे राजा थारो मारवाड़'

आर्थिक महत्व

फोग की पुष्प कलिकाएँ जिन्हे स्थानीय भाषा में 'फोगला' कहते हैं, जिनका उपयोग रायता बनाने व छाछ के साथ किया जाता है। माना जाता है कि इसकी प्रकृति शीतल होती है जिसके कारण गर्मियों में लू का प्रभाव नहीं होता।

ऊँट, भेड़ व बकरी इसकी कोमल टहनियों को चाव से खाते हैं। इसके चारे को 'लासू' कहते हैं जो कि पश्चिमी राजस्थान में ऊँटों हेतु एक महत्वपूर्ण पौष्टिक चारा है। क्षेत्र में प्रचलित एक लोकोक्ति में फोग का बकरी दुग्ध उत्पादन में महत्व के सम्बंध में कहा गया है:

"फोग फोटा मिनमण ब्याही, भैंसरी धिराणी छाछ लेवण आई"

अर्थात जब फोग पुष्पन अवस्था में आता है और बकरी इसे खाती है तो बकरी में दूध की मात्रा बढ़ जाती है और भैंस की मालकिन भी बकरी पालकों के यहाँ छाछ लेने आती है।

प्राचीन समय से ही इस क्षेत्र में फोग की लकड़ी का ईंधन हेतु बहुतायत से उपयोग रहा है और आज भी इसे जलाऊ लकड़ी हेतु सर्वोत्तम मानते हैं।

फोग की जड़ों का काढ़ा मसूड़ों की बीमारी के निदान में लाभदायक माना गया है। यदि आंखों में आक (केलोट्रोपिस प्रोसेरा) का दूध (लेटेक्स) गिर जाए तो इसके उपचार के लिए फोग की टहनियों का रस निकाल कर उपयोग में लेते हैं।

संरक्षण

पारिस्थितिकी एवम् आर्थिक उपयोगिता की दृष्टि से फोग इस क्षेत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण पादप प्रजाति है एवम् थार मरूस्थल की प्राकृतिक वनस्पति का एक महत्वपूर्ण अंग है। टिब्बा स्थिरीकरण हेतु फोग का विशेष सीन रहा है। फोग के बहुआयामी उपयोगों को देखते हुए यह आवश्यक है कि जो इसके प्राकृतिक परिवेश हैं उन्हे चिन्हित किया जाए, जिससे इस प्रजाति का स्वस्थाने संरक्षण किया जा सके। साथ ही विभिन्न भू–उपयोग प्रणालियों में उपयोग कर इस प्रजाति के संवर्धन की ओर हमें विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है।

मरूस्थलीकरण नियंत्रण पर्यावरण सूचना प्रणाली केन्द्र
भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर - 342003